Review Of Research
Vol. 4 | Issue. 6 | March. 2015
Impact Factor : 3.1402 (UIF)
ISSN:-2249-894X
Available online at www.lbp.world

ORIGINAL ARTICLE

"कमलेश्वर का साहित्य - हिन्दि सिनेमा"

डॉ. नीता भोसले
सह प्राध्यापक, सरकारी प्रथम श्रेणि महाविद्यालय, कमलापूर.

सिनेमा आधुनिक युग के अत्यंत लोकप्रिय कला का माध्यम है। सिनेमा का आधारभूत तत्व है उसकी कथा वस्तु सिनेमा में साहित्य, संगीत अभिनय, गायन, चित्रकला शिल्प आदि होतेहुए भी सिनेमा का ढ़ाँचा उसके संपूर्ण कथा वस्तु पर निर्धारित होता है । इसलिए समूचे विश्व में साहित्य और सिनेमा के बीच एक सेतु बना है। अनेकानेक भशाओं की अनेकानेक कृतियों पर सिनेमायी कृतियों का सृजन हुआ है। हिन्दी के आरंभिक सिनेमा से लेकर आज तक अनेक फिल्मकारों ने साहित्य की प्रतिष्ठित कला कृतियों पर भी फिल्मों का निर्माण किया है। जिस में सेक्सपीयर, टॉलस्टाय, कालिदास, शूद्र से शुरु होकर भारतेंदु ट्यागोर, मोहन राकेश, प्रेमचंद, रामचंद्र शर्मा 'गुलेरी', जैनेंद्र, अमृतलाल नागर फणीश्वरनाथ रेणु, राजेंद्र यादव, मन्नु भण्डारी जैसे अनेक लेखकों की कृतियों पर अनेक प्रसिद्ध फिल्मांकन किया गया है।

इस प्रकार हम देखते है कि हिन्दी कथा लेखक के रूप में कमलेश्वर को अन देखा नहीं किया जा सकता । क्योंकि हिन्दी सिनेमा जगत को कमलेश्वर की अनमोल देन है। कमलेश्वर के जीवन चरित्र को हम देखेंगे तो कमलेश्वर ने अपने साहित्य को आगे बढ़ाने के लिए सिनेमा से जुडना अनिवार्य समझा। क्योंकि साहित्य केवल पढ़े लिखे वर्ग तक ही सीमित होता है। क्योंकि सिनेमा संपूर्ण विश्व को अपने साथ जुड़ देताहै। सिनेमा तथा साहित्य का अंतरंत संबंध होते हुए भी सिनेमा के निर्मिति साहित्य सृजन के दृष्टिकोण से संभव नहीं होती। साहित्य की भूमिका जहाँ परोक्ष रूप में दिखाई देती है, या स्पष्ट

दृष्टिकोण से असमर्थ होती है, उस समय शब्दों की पूर्ती दृश्य, श्रव्य साधनों से पूरी हो जाती है।

एक सफल साहित्यकार के रूप में कमलेश्वर का योगदान बहुमूल्य रहा है। उन्होंने साहित्य से सिनेमा को जुडाने का एक सुधीर्घ प्रयास किया है। कमलेश्वर के दो उपन्यासों में 'एक सड़क सत्तावन गली' पर बनी बई, किन्तु यह फिल्म अधिक लोकप्रिय नहीं हुई किन्तु इसे राष्ट्रीय पुरस्कार व्दारा पुरस्कृत किया गया । तलाश कहानी वस्तुतः मानवीय अस्मिता की संवेदनात्मक तलाश की महागाथा है। यह जीवन की विषम परिस्थितियों में भी निरंतर जूझने की कथा है। मूल रूप से तलाश एक लघु कथा है, जिस में दो ही प्रमुख पात्र है। मूलतः माँ मंजरी और बेटी सुमी की भावाभिव्यक्ति बहुत ही संवेदनात्मक रूप से की गयी है। तलाश की नायीका एक प्रभुद्ध कॉलेज की अध्यापिका है, वह यौवन अवस्था में ही विधवा हो जाती है। पति के अभाव में वह पूर्णता की तलाश करती है, जो मात्र शारीरिक संबंधों पर जाकर समाप्त नहीं हो सकती। स्त्री और पुरुष की बहुयामी परिप्रेक्ष्य की तलाश में मंजरी असफल होती है। इस मानवीय मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में लेखक ने महानगरीय जीवन और उसके परिवेश की उद्देश्य को रेखांकित किया गया है।

कमलेश्वर ने मास का दरिया कहानी संग्रह की भूमिका लिखते समय स्वयं कहते है - "कहनी लिखना मेरा व्यवसाय नहीं है, मेरा विश्वास है, मैं अकेला होता तो मुझे किसी आस्था विश्वास की जरूरत नहीं पडती, पर मैं अकेला नहीं हूँ। अस्तित्व के संकट को एक दूसरे पर या क्लर्क बनकर भी झेला जा सकता है। मैं लेखक इसलिए हूँ कि उसे झेलने के सात सात सोचने का वक्त भी निकाल सकता हूँ... इसलिए क्षण में जीने की कोई बध्यता नहीं होती । पीछे देखकर वर्तमान को वहनकर आगे देखना सहज प्रक्रिया बन जाती है। एक सफल कथाकार की कथा तब सार्थक होती है, जब उसकी कथावस्तु जनमानस तक पहुंचती है। यह श्रेय कमलेश्वर को 1975 में मिला, जब उनके दो प्रसिद्ध उपन्यास 'काली आंधी' पर 'आंधि' फिल्म बनी गई और 'आगामी अतीत' पर 'मौसम्' इन दोनों फिल्मों की कथावस्तु बहुत ही संवेदनशील और उद्देश्यपूर्ण लिखी गई ऐसा लगता है। क्योंकि कथावस्तु को आधुनिक जीवन से जोडकर लिखा गया; ऐसा प्रतीतल् होता है। किन्तु जब हम इस फिल्म को देखते हैं, तब ऐसा प्रतीत होता है, मानो साहित्यकार के सात सात किसी शायर में भी इसका साथ साथ दिया होगा । इसमें गुलजार की भूमिका अप्रतीम है । जिन्होंने इसका फिल्मी रूपंतरण किया है । उन्होंने कथा के पात्रों को स्वाभाविक रूप से ग्रहण करते हुए उन्हें भावात्मक उत्कर्ष भी प्रधान किया है । इन दोनों फिल्मों में चरित्र सीधे उपन्यास से निकलकर सिनेमा में आकार खडे हुए, ऐसा प्रतीत होते हैं। इसका प्रत्येक पात्र अपने एक विशिष्ठ प्रकार के चरित्र को लेकर सामने आ जाता है। आंधी की

कथावस्तु एक महत्वकांक्षी स्त्री की होते हुए भी अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक और राजनीतिक ही नहीं पारिवारिक और वैयक्तिक जीवन की विघठन की महागाथा है । सप्ताह के वर्चस्व में नैतिक, अनैतिक की कोई मर्यादा नहीं रहती, जिसमें पारिवारिक जीवन व्यक्तिगत जीवन को दाँव पे लगाया जाता है ।

आगामी अतीत उपन्यास पर 'मौसम' फिल्म बनी जोअ त्यंत लोक प्रसिद्ध रही है। इसमें नारी के जीवन में एक चोटी सी भूल स्ंपूर्ण भविष्य को इस तरह कलुशित कर देतीहै, और वह इस अमानवीय समाज में किस किस तरह शोषित होती है इसका सीधा चित्रण इसमें हुआ है । इस कथा में नायक नायिका को वचन देकर समय पर वापस नहीं लौट आता व उसकी प्रतीक्षा करते हुए दिवंगत हो जाती है। उसके बेटी वेश्या कृति के जल में फस जती है। अपने जीवन के अपने जीवन के उत्तरार्थ में जब नायक अपनी प्रेमिका को घूमतेहुये पहोंच जाताहै तो उसे मालूम होता है कि वह मर चुकी है, लेकिन उसकी बेटी जिंदा है यह सुनकर वह उसकी तलाश में लगताहै, उसे वह मिल तो जाती है, लेकिन वह भी वेश्या के रूप में। उसे इस रूप देखकर वह बहुत दुःखी होता है और उसे उस नरकीय दुनिया से निकालकर अम जीवन जीने के लिए योग्य बनाना चाहता है, किन्तु उसकी बेती उस से नफरत करने लगतीहै, और वह उस दुनिया से बाहर आने के लिए तैयार नहीं रहती । उसका अभिशाप्त अती उसे किसी भी पुरुष के साथ रहने के लिए इनकाअ करता है। जहाँ जीवन, वहाँ उसका जीवन बहोत दुःखभरा होताहै किन्तु वह उस जीवन को जुलसाते हुए अपनी अस्मिता को बनाये रखने के लिए विवष होती है । उस समय कोठे की गंगूबाई उसे कहती है- देख बेटी इन कोठों की सीढीयाँ कभी किसी आँगन में नहीं खुलती, इन कोठों से जकर कभी किसी लडकी का बसते हुए मैंने नहीं देखा। कबी किसी मर्द में दम नहीं देखा जब कोई भी मर्द यहाँ आता हौइ तो बहकी हुई साँसे लेकर आता है, जब तप उतर जाता है तो...." गंगूबाई का चरित्र एक कोठेवाली का होते हुए भी अत्यंत कोमल तथा संवेदनशील है। वह कहती है कि यह कभी नहीं हुआ बेटी लाखों करोडों में से कोई एक भी इस नरकीय दुनिया से निकालकर किसी लडकी का जीवन बसाया होगा । इस तरह हम देखते हैं कि कमलेश्वर का साहित्य सर्व व्यापक है। इस प्रकार हम देखते हैं कि कमलेश्वर के साहित्य एक निश्चित मुकाम से जुड हुआ था, किन्तु हम देखते हैं कि कमलेश्वर ने अपनी कहानियों पर फिल्में बनाने के लिए निर्माताओं को प्ारोत्साहित करने लगे। निर्माताओं से प्रोत्साहित होकर उन्होंने कलात्मक फिल्में लिखना प्रारंभ कर दिया जो आगे चलकर सिने जगत में बहुत प्रसिद्ध हो गई।

कमलेश्वर व्दारा लिखी गयी लगभग 60 फिल्में आज उपलब्ध हैं, जिसके व्दारा उन्होंने फिल्म जगत में अपनी एक अलग छाप बनाई। साहित्य और सिनेमा से अटूत

संबंध बनाये रखने में कमलेश्वर का अप्रतीम योगदान रहा है। इनमें सारा आकाश, र्जनीगंधा, आँधी, मौसम, पती-पत्नी और वो, बाजी, आज का एम्.एल्.ए., रम अवतार, मिस्टर नटवरलाल, सौतन जैसी अनेक लोकप्रसिद्ध फिल्में बनी। उसमें से सौतन अधिक लोकप्रिय रही, जिसकी रजत जयंती, (सिल्वर जुबिली माननेवाली फिल्में साबीत हुई) उसी तरह अमानुष, साजन बिना सुहागन ने स्वर्ण जयंती (गोल्डन जुबीली का रिकार्ड) बनाकर फिल्मी जगत में मील का पत्थर साबीत हुई। इस तरह हम देखते हैं कि सिनेमा में सफलता और औसत प्रतिशत कही बहोत आगे जाकर उनका सिनेमाई लेखन व्यावसायिक रूप से भी सफल हुआ है।

कमलेश्वर को फिल्म लेखन में बडी सफलता अर्जित हुई जिस कारण अनेक निर्माताओं के सात मित्रता बढ़ी फलतः उन्हें व्यवसाय के लिए फिल्में लिखने से निर्माताओं के लिए फिल्म लिकना अवश्यक हो गया। उनका साहित्य सिने जगत से इस कदर जुड गया कि वे सिर्फ फिल्म के लिए ही लिखना अपना व्यवसय बना लिये। उनके दृष्टिकोण में वह विशाल भारतीय समाज या जिन तक वह अपनी बात पहुंचानी थी, वह फिल्म के माध्यम से पहुंचाने लगी, जिस कारण उन्हें बहुत प्रसिद्धी प्राप्त हुई । बदी सिद्धत के सात कमलेश्वर ने हिंदी सिनेमा जगत में अपनी एक अलग पहचान बनाई, जिसका एक मात्र उदाहरण है उन्हें दिए गए सन्मान। कमलेश्वर के साहित्य पर लिखी गयी कहीं ऐसे फिल्में हैं, जिन्हें राष्ट्रपती, फिल्म फेर अवार्ड, साहित्य अकादमी, पद्मभूषण जैसे अनेक सन्मानों से नवाजा गया है। यह एक साहित्यकार के लिए साहित्य जगत को एक अप्रतीम योगदान है।

सुप्रल्सिद्ध कवयित्री पद्म सचिदेव जिन्होंने फिल्मों के लिए भी अत्यंत अस्मरणीय गीत लिखी है, वे कहती है-कमलेश्वर भाई के सात में एक बात कहा-पद्मा काल धन फिल्मों के बरबादी का कारण बना, उसी से सब खूराफते निकली, दारू, औरत, रातों की रंगीण पर्टीयाँ, होटलों की महफिले वहाँ से जो बात निकलती है, उन में अगरबत्ती के खुशभू नहीं होती, शराब की खूराफतों की बदबू होती है।"